Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 12, (2017) 137-141

"भीमशतकम्" में विवेचित दार्शनिक दृष्टि

अनामिका[1] एवं जे0के0 गोदियाल[1]
[1]संस्कृत विभाग हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल–246001

*Corresponding Author Email: jaigod54@gmail.com

Received: 07.09.2017; Revised: 17.10.2017; Accepted: 20.12.2017
©Society for Himalayan Action Research and Development

सारांश–: "भीमशतकम्" एक खण्डकाव्य है । इसमें सविधान र्निमाता डा0 अमबेडकर के जीवनवृत एवं उनकी विचारधारा को भारतीय सर्दभं में निरुपित किया गया है विशेषकर दार्शनिक पृष्ठभूमि में इस दृष्टिकोण से यह शोधपत्र महत्वपूर्ण है।

कुंजी शब्द: दर्शन, सविधान, वेदांग, षडभेद, प्रभेद

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोधपत्र में कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल द्वारा रचित खण्डकाव्य "भीमशतकम्" में विवेचित दार्शनिक दृष्टि का वर्णन प्रस्तुत है ।

"दर्शन" शब्द संस्कृत की "दृश्" धातु से बना है–"दृश्यते यथार्थ तत्वमनेन" अर्थात जिसके द्वारा यथार्थ तत्व की अनुभूति हो वही दर्शन है। अंग्रेजी के शब्द "फिलॉसफी"का शाब्दिक अर्थ " ज्ञान के प्रति अनुराग" होता है। दर्शन चिन्तन का विषय न होकर अनुभूति का विषय माना जाता है। यदि आत्मवादी भारतीय दर्शन की भाषा में कहा जाए तो यह सत्य है कि दर्शन द्वारा केवल आत्म ज्ञान ही न होकर आत्मानुभूति हो जाती है। दर्शन हमारी भावनाओं एवं मनोदशाओं को प्रतिबिम्बित करता है और ये भावनायें हमारे कार्यों को नियंत्रित करती हैं।

दर्शन का भारतीय सम्प्रत्ययः–भारत में दर्शन का उद्गम असन्तोष या अतृप्ति से माना जाता है। हम वर्तमान से असन्तुष्ट होकर श्रेष्ठतर की खोज करना चाहते हैं। यही खोज दार्शनिक गवेषणा कहलाती है। दर्शन के विभिन्न अर्थ बताये गये हैं। उपनिषद् काल में दर्शन की परिभाषा थी–जिसे देखा जाये अर्थात् जिससे सत्य के दर्शन किये जाय वही दर्शन है। (दृश्यते अनेन इति दर्शनम्–उपनिषद)। डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के अनुसार–दर्शन वास्तविकता के स्वरूप का तार्किक विवेचन है।

दर्शन का पाश्चात्य सम्प्रत्ययः– पाश्चात्य जगत में दर्शन का सर्वप्रथम विकास यूनान में हुआ। प्रारम्भ में दर्शन का क्षेत्र व्यापक था परन्तु जैसे–जैसे ज्ञान के क्षेत्र में विकास हुआ दर्शन अनुशासन के रूप में सीमित हो गया। प्लेटो के शब्दों में–"पदार्थों के सनातन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन है"। इसी प्रकार यूनानी दार्शनिक अरस्तू के शब्दों में–"दर्शन एक ऐसा विज्ञान है जो परमतत्व के यथार्थ स्वरूप की जॉच करता है"।

दर्शन के सम्बंध में उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि भारतीय दृष्टिकोण और पाश्चात्य दृष्टिकोण में मूलभूत अंतर है। दर्शन की मूलभूत सर्वसम्मत परिभाषा होनी चाहिए– "दर्शन ज्ञान की वह शाखा है, जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एवं मानव के वास्तविक स्वरूप सृष्टि–सृष्टा, आत्मा–परमात्मा, जीव–जगत, ज्ञान–अज्ञान, ज्ञान प्राप्त करने के साधन और मनुष्य के करणीय और अकरणीय कर्मों का तार्किक विवेचन किया जाता है।

कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल द्वारा रचित "भीमशतकम्" नामक खण्डकाव्य में प्रतिपादित दार्शनिक विचारों का वर्णन करने से पूर्व दर्शन के भेदों का जानना नितान्त आवश्यक है। दर्शन के दो भेद हैं–आस्तिक दर्शन तथा नास्तिक दर्शन।

आस्तिक दर्शन भारतीय परम्परा में उन दर्शनों को कहा जाता है जो वेदों को प्रमाण मानते थे। इसके अन्तर्गत छः मुख्य दर्शन न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त, मीमांसा सम्मिलित हैं। इस कारण आस्तिक दर्शन को "षड्दर्शन" भी कहते है।

नास्तिक दर्शन अर्थात्वेद एवं ईश्वर की सत्ता को न मानना है। नास्तिक दर्शनों में चार्वाक, बौद्ध, और जैन दर्शन सम्मिलित हैं।

"भीमशतकम्" के गहन अध्ययनोपरान्त यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यद्यपि कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल ने इसमें भारत रत्न डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के जीवन के एक पक्ष का विस्तार से वर्णन करते हुए लिखा है कि किस प्रकार उन्होंने समाज में प्रचलित जातिभेद की अवधारणा का खण्डन किया और सम्पूर्ण मानव जाति को एकता के सूत्र में बांधने का सराहनीय प्रयास किया। उन्होंने समाज में अछूत माने जाने वाली "हरिजन" जाति के उत्थान के लिए अनेक प्रयास किए तथापि "भीमशतकम्" में भी आस्तिक व नास्तिक दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

भीमशतकम् में आस्तिक दर्शन :– कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल द्वारा रचित खण्डकाव्य "भीमशतकम्" में आस्तिक दर्शन का वर्णन स्थान–स्थान पर किया गया है। कवि की दृष्टि में यह संसार ईश्वर द्वारा निर्मित एक अनोखी रचना है जिसमें भिन्न–भिन्न प्रकृति के मनुष्य निवास करते हैं। जिसके आधार पर यह सृष्टि–प्रक्रिया निरन्तर चलती है–

संसारसारस्तु विचित्र एव,

रूढ़ाश्च मूढ़ाश्च विचारवन्तः।

भवन्ति भव्याः मनुजाः जगत्याः,

तेनैव लोके ध्रुवमत्र याति।।[1]

कवि के अनुसार इस सृष्टि के समस्त क्रियाकलाप ईश्वर की इच्छा से ही संचालित होते हैं। इसका वर्णन करते हुए कवि ने "भीमशतकम्" में लिखा है कि–

कृतज्ञभावी प्रियभीमरावो,

राज्यस्य सेवां विदधातुमिच्छन्।

न सम्प्रयातस्सफलत्वम्,

विधेर्विधानन्तु किमन्यमेव।।[2]

अर्थात् जब भीमराव अम्बेडकर बड़ौदा रियासत की सेवा में संलग्न थे तो वहॉ उनका " अछूत" कहकर अपमान किया गया। इस प्रकार अपमानित होकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी और अस्पृश्यता के विनाश के लिए कटिबद्ध हो गए। इस प्रकार कवि की दृष्टि में ईश्वर की यही इच्छा थी कि डॉ0 अम्बेडकर समाज में प्रचलित जातिवाद की अवधारणा को समूल नष्ट कर दें।

"भीमशतकम्" में वर्णित आस्तिक दर्शन का विवेचन निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट है–

1–**भीमशतकम् में न्यायदर्शनः**–"भीमशतकम्" में न्यायदर्शन की अभिव्यक्ति पाखण्डों के विरोध में दिखाई देती है–

पाखण्डकैस्तत्र मुहुर्मुहुः सः,

प्रताडितोऽयं गुणरत्नराशिः।

स्वकार्यवृत्तेश्चलितो न जातो,

धैर्यस्य चैषा महती परीक्षा।।[3]

कवि न्यायदर्शन के अनुकूल शैली का प्रयोग करने में सिद्वहस्त है–

"पाखण्डखण्डने दक्षः परपीडाप्रपीडितः" इस पंक्ति में कवि ने श्रीहर्ष विरचित "खण्डनखण्डखाघ" ग्रंथ की शैली का अनुसरण किया है।

2–भीतशतकम् में योग दर्शनः– भीमशतकम् में योग दर्शन के तत्वों का प्रकारान्तर से समावेश किया गया है। भीमराव अम्बेडकर एक साक्षात् योगी के समान अपना जीवन समाज के लिए समर्पित कर देते है। अम्बेडकर वास्तव में योगी कहलाने के अधिकारी थे क्योंकि वे अपने लिए नहीं अपितु समाज में दलित जाति के उत्थान के लिए आजीवन संघर्षरत रहे–

दलिताराधने बाधां सम्वीक्ष्य तेन सत्वरम्।

शालायाः शिक्षणं त्यक्तं लाभप्रदमपि प्रियम्।।[4]

"भीमशतकम्" में कवि ने डॉ0 अम्बेडकर के लिए "यति" शब्द का प्रयोग किया है। दर्शनशास्त्र के अनुसार "यति" और "योगी" ये दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं–

विद्याध्ययन भावेन पित्रासाकमसौ यतिः।

मुम्बयीनगरी प्राप्तो धनाभावेऽपि सद्व्रती।।[5]

इसी प्रकार "सन्तापे परितप्यमानः कष्टानुभूतिमं कुरूते यतीन्द्रः"। तथा "जयतु–जयतु लोके भीमरावो यतीन्द्रः" भीमशतकम् की इन पंक्तियों में योगदर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

3–भीमशतकम् में वेदान्त दर्शन :– "भीमशतकम्" में कवि द्वारा वेदान्त दर्शन का निरूपण "पन्थानमनुगच्छन्तः स्वर्गलोकमवाप्नुयात्" पंक्ति में किया है। स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। दर्शनशास्त्र में स्वर्गलोक की प्राप्ति के लिए जो मार्ग बतलाया गया है। उसका भी कवि ने इस उदाहरण में पर्याप्त विवेचन किया है।

"चरैवेति–चरैवेति" इन शब्दों के माध्यम से जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है उसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए कवि ने लिखा है कि इस संसार में जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त होता है लेकिन यह संसार निरन्तर प्रवाहमान है–

संसारसारस्तु विचित्र एव,

रूढ़ाश्च मूढ़ाश्च विचारवन्तः।

भवन्ति भव्याः मनुजाः जगत्यां,

तेनैव लोको ध्रुवमत्र याति।।[6]

जिस प्रकार सभी नदियों का गम्य समुद्र होता हैं उसी प्रकार सभी धर्मों का गम्य भी एक होता है इसी वेदान्त के दृष्टि कोण को कवि ने भीमशतकम् में इस प्रकार व्यक्त किया है–"पन्थानमनुगच्छन्तः स्वर्गलोकमवाप्नुयात्"। आदि शंकराचार्य ने वेदान्त के इस दृष्टिकोण का वर्णन इस प्रकार किया है–

रूचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां।

नृणामेकोगम्ययस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।[7]

अम्बेडकर की प्रसंशा करने में कवि ने शुद्ध एवं साधक व्यक्ति का चित्रण किया है–

राष्ट्रवादी महानेश भारतीयो गुणोत्तमः।

पवित्रः शुद्धिचित्तश्च भीमरावो विलोक्यते।।[8]

1–भीमशमकम् में नास्तिक दर्शनः– " भीमशतकम्" में नास्तिक दर्शन (चार्वाक, बौद्ध व जैन) में से कवि ने प्रकारान्तर से जैन व बौद्ध दर्शन का निरूपण किया है।

"भीमशतकम्" खण्डकाव्य के नायकभीमराव अम्बेडकर एवं कविरत्न श्रीकृष्ण सेमवाल दोनों ही बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। "भीमशतकम्" ग्रंथ का प्रारंभ मंगलाचरण श्लोक से करते हुए कवि लिखते हैं–

गौतमं प्रथमं नत्वा नत्वा सर्वोन्गुणोत्तमान्।

लिखामि शतकं रम्यं भीमरावस्य साम्प्रतम्।।[9]

उपरोक्त मंगलाचरण श्लोक में कवि ने ग्रंथ की निर्विघ्न समाप्ति हेतु सर्वप्रथम महातपस्वी भगवान बुद्ध को प्रणाम किया है। "भीमशतकम्" के नायक डॉ0 अम्बेडकर भी बौद्व धर्म के अनुयायी थे। "भीमशतकम्" के अधोलिखित श्लोक से यह स्पष्ट हो जाता है–

राष्ट्रवादस्य भावेन भीमेन समलंकृतः।

हिन्दूनां भागरूपोऽयं बौद्धधर्मोन्वहिंसकः।।[10]

"भीमशतकम्" में जाति भेद की जिस अवधारणा का खण्डन किया गया है उसी प्रकार बौद्ध तथा जैन लेखकों ने भी जातिवाद की कटु आलोचना की है। सातवीं आठवीं शताब्दी में जैन महाकवि जटासिंह नन्दि ने जाति व्यवस्था के विरोध में वैसे ही तर्क दिए है जैसे "भीमशतकम्" में वर्णित है। जटासिंह ने मनुष्य जाति को वर्ण के आधार पर विभाजित करने को अनुचित मानते हुए लिखा है कि ब्राह्यमण चन्द्रकिरणों के समान श्वेत नहीं होते, क्षत्रिय भी किंशुक पुष्प के समान गौरवर्ण के नहीं होते, वैश्य हरिताल के समान हरे रंग के नहीं होते और शूद्र भी कोयले के समान कृष्ण वर्ण के नहीं होते–

न ब्राह्यमणाश्चचन्द्रमरीचिशुभ्रा न क्षत्रियाः किंशुकपुष्पगौराः।

न चेह वैश्या हरितालतुल्याः शूद्रा न चाङ्गारसमानवर्णाः।। [11]

जिस प्रकार जैन कवियों ने जातिवाद की अवधारणा के खण्डन व मानव जाति के एकता के पक्ष में विचार व्यक्त किए है उसी प्रकार "भीमशतकम्" में भी जातिवाद का खण्डन करते हुए सम्पूर्ण मानव जाति की अखण्डता का समर्थन किया करते हुए कवि ने लिखा है–

मानवाः मानवाः सर्वे समरक्ताः समक्रियाः।

कथमस्पृश्यता तत्र किमाश्चर्यमतः परम्।।[12]

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि कवि श्रीकृष्ण सेमवाल ने अपने"भीमशतकम्" में वर्ण्य विषय अम्बेडकर के सामाजिक पक्ष के साथ–साथ भारतीय समाज की एक प्रेरणात्मक प्रस्तुति दी है। इसी संदर्भ में उन्होंने भारतीय समाज की आध्यात्मिक मानसिकता का भी संकेत किया है। इस संकेत को हम दार्शनिक सिद्धांतों का प्रतिपादन कह सकते हैं। संस्कृत के कवियों की काव्य रचना की अपनी एक विशिष्ट परम्परा है। इस परम्परा में ये कवि वर्ण्य विषय का प्रतिपादन तो करते ही हैं किंतु साथ ही भारतीय समाज की शाश्वत् परम्पराओं को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से अपने साहित्य में समन्वित करते रहे हैं। प्राचीन शाश्वत् परम्पराओं को समन्वित करने के इस क्रम में इन कवियों ने समाज,उसकी संस्कृति, उसका धर्म, उसका दर्शन तथा उसके साहित्य आदि की समीक्षा भी अपने–अपने काव्यों में बहुधा की है।

कवियों द्वारा प्राचीन परम्पराओं के इस अवग्रहण के फलस्वरूप ही इन कवियों के साहित्य में हमें दर्शन की विचारधारा देखने को मिलती हैं। सांस्कृतिक बिम्ब यहॉ विवेचित होते है। सामाजिक संघटना यहॉ प्रतिपादित की गई होती है। तथा समाज से जुड़ी अन्य प्रासंगिक परम्पराऍ भी यहॉ अवलोकित होती हैं। भारत का जो दार्शनिक साहित्य है वह यद्यपि अनेक भागों में विभक्त है, उनके अपने–अपने सिद्धान्त हैं तथापि इन सभी का कथन एक ही है सभी दार्शनिक विचारधाराऍ जीव,जगत, ईश्वर,मोक्ष ,सत्य,असत्य, ज्ञान, भक्ति, आदि को अपनी–अपनी विचारधारा के अनुसार

व्याख्यायित करते हैं। वास्तविकता यह है कि इन विचारधाराओं के निष्कर्ष रूप में संसार का मिथ्यात्व एवं ईश्वर का नित्यत्व प्रतिपादित होता है। उसकी सत्ता ही सर्वोपरि है। उसके बिना संसाार की कल्पना संभव नहीं है। वही कर्ता एवं संहारकर्ता है।

संदर्भ सूची–

1. भीमशतकम् खण्डकाव्य श्लोक सं0 36
2. भीमशतकम् खण्डकाव्य श्लोक सं0 53
3. भीमशतकम् खण्डकाव्य श्लोक सं0 51
4. भीमशतकम् खण्डकाव्य श्लोक सं0 71
5. भीमशतकम् खण्डकाव्य श्लोक सं0 39
6. भीमशतकम् खण्डकाव्य श्लोक सं0 36
7. भीमशतकम् खण्डकाव्य श्लोक सं0 07
8. भीमशतकम् खण्डकाव्य श्लोक सं0 80
9. भीमशतकम् खण्डकाव्य श्लोक सं0 09
10. भीमशतकम् खण्डकाव्य श्लोक सं0 86
11. भीमशतकम् खण्डकाव्य श्लोक सं0 25
12. वरांगचरित श्लोक सं0 36

****